# मातेश्वरी जगदम्बा के संग की अविस्मरणीय यादें - ओमप्रकाश भाई जी

**मेरे** जीवन का परमसौभाग्य रहा है कि विश्व की अति उत्कृष्ट आत्मा मातेश्वरी जी के सान्निध्य मे 10 वर्ष व्यतीत करने का सुअवसर मिला। मैने देखा कि मातेश्वरी जी की योग की

स्थिति इतनी महान थी कि उनके पास बैठने मात्र से ही व्यक्ति अपने आप अशरीरी बन जाता था। मातेश्वरी जी से मिलने मात्र से ही जीवन के अंदर विकार एवं पुराने संस्कार भस्म होने लगते थे। वे मेरे जीवन में एक ऐसी प्रथम एवं अंतिम हस्ती थी जो आध्यात्मिक शक्ति की पुंज थी। संसार में कई महिलायें हैं एवं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय महिलाओं द्वारा संचालित संस्था है। लेकिन मुझे आज तक ऐसी कोई महिला नहीं दिखाई दी जिसको देखने मात्र से ही माँ का प्यार अनुभव हो। ऐसा लगता था कि हमारा उनसे कोई विशेष जनम-जनम का रिश्ता रहा है और भावी की ये कैसी विडम्बना रही जो उससे हमें दूर कर दिया गया, ऐसा सोचकर जब माँ के गले मिलते थे तो नेत्रों से प्यार भरी अश्रुधारा बंद नहीं होती थी। उनकी वाणी में कितनी मधुरता एवं शक्ति भरी हुई रहती थी। मातेश्वरी जी में ज्ञान के प्रत्येक शब्द को पूर्णतया स्पष्ट करते हुए जीवन में सहज रूप से धारण कराने की अद्भूत क्षमता थी जो मुझे बहुत कम लोगों में अनुभव हुई। मातेश्वरी जी जब कभी पंजाब के टूर पर आती थी तो अंबाला छावनी में हमारे लौकिक घर में उनको ठहराया जाता था। उस समय हमें अपनी लौकिक पढाई लिखाई एवं काम काज की सुधबुध नहीं रहती थी और यही इच्छा बनी रहती थी कि मै अपनी मातेश्वरी जी की सेवा करता रहूँ। जब मैं पटियाला में इंजीनि-

*मातेश्वरी जी की योग की स्थिति इतनी महान थी कि उनके पास बैठने मात्र से ही व्यक्ति अपने आप अशरीरी बन जाता था अंदर के विकार एवं पुराने संस्कार भस्म होने लगते थे..*

यरिंग कॉलेज में पढता था उन दिनों मातेश्वरी जी को पिताश्री ने एक सप्ताह के लिये हमारे पास पटियाला में रखा था। मेरे साथ इंजीनिारिंग कॉलेज में भ्राता आत्मप्रकाश (ज्ञानामृत प्रेस) एवं अन्य इंजीनियरिंग कॉलेज के विद्यार्थी थे जो मिलकर सेंटर चलाते थे। उन दिनों मातेश्वरी जी ने हमारी जो ज्ञान योग की पालना की वह मेरे जीवन मेरे आध्यात्मिक जीवन की पक्की नींव बन गई। जो आज तक भी कदम-कदम पर मम्मा की प्यारी शिक्षायें एवं मर्यादायें हमें शक्ति देती है। जब मैं मधुबन जाता था तो मम्मा मेरे लिए कोई विशेष सौगात संभाल कर रखती थी। एक बार मम्मा ने

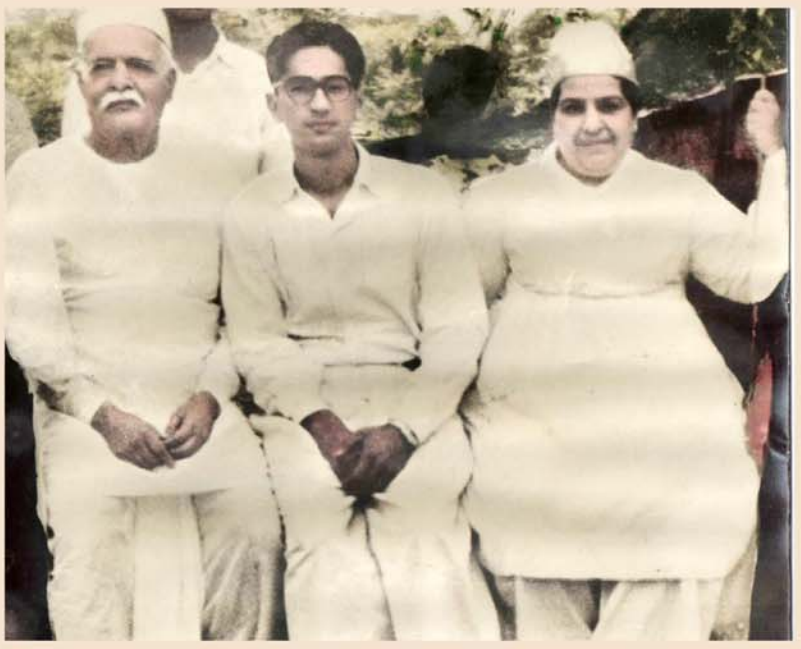

मुझे सफेद शर्ट दी तब मुझे ये ज्ञान नहीं था ये शर्ट किस कपडे की बनी है मैने सोचा ये शर्ट पैराशूट के कपडे की बनी है। और मुझे सौगात दी थी इसलिए उसे प्यार से संभालकर रख दिया था उसे उपयोग नहीं किया था। दरअसल ये शर्ट कोई विदेश से आया था और उसने यज्ञ में दी थी। उस समय भारत में टेरीकॉट का प्रचलन बहुत कम था और ये कपडा बहुत मंहगा होता था जो उस समय बहुत नामीग्रामी एवं धनाढ्य लोग ही पहन सकते थे। एक वर्ष बाद हमारे लौकिक घर में हमारे चचेरे भाई जो मिलिट्री में मेजर के पद पर थे वेआये वो उस कीमती शर्ट को देखकर चौंक गये और उस शर्ट को स्वयं के लिए मांगने लगे। मैने कहा ये मेरी माँ की सौगात है इसे मैं किसी को नहीं दे सकता जब उन्होंने मुझे उस शर्ट का महत्व बताया। तब मैने बहुत ही श्रद्धा भावना से वह शर्ट पहनना शुरू किया। 2 वर्ष तक मुझे इस शर्ट ने बहुत साथ दिया। उस शर्ट को रोज दिनभर पहनता और रात्रि को धोकर सुखा देता था चूंकि यह टेरीकॉट था इसे प्रेस की जरूरत नहीं थी इसकी क्रिज यथावत रहती थी। इसलिए कुमार एवं अतिव्यस्त जीवन में मेरे लिये मम्मा की सौगात ही नहीं अपितु बहुत कीमती वरदान सिद्ध हुआ। इस प्रकार कितनी ही बातें है जो मम्मा के साथ में मैने अनुभव की है। उन बातों को स्मरण कर मेरे नयन आज भी स्नेह से भर आते हैं। और उनकी प्यारी मूरत सामने आ जाती है। ऐसी स्नेहीमूर्त अलौकिक माँ को मेरा शत्-शत् नमन्।

# आदमी को इंसान बनाना सबसे बड़ी समाज सेवा

**इंदौर।** हमारा भारत देश अनेक चरित्रवान विभूतियो के कारण महान गाया जाता है एक समय था जब भारत के लिए कहा जाता था **"जहां डाल-डाल पर सोने की चिड़िया..."** और अब कहा जाता है **"देख तेरे संसार की हालत क्या हो गई भगवान"**। जब इंसान के जीवन मे प्रेम, सद्भावना आदि नैतिक मूल्य थे तो इंसान के जीवन की वेल्यू थी और भारत देश महान गाया जाता था। लेकिन आज इंसान का बौद्धिक स्तर तो बढता जा रहा है। लेकिन उनके अंदर सद्चरित्र की कमी होती जा रही है। इंसान अपनी अन्तर्निहित शक्ति को भूल चुका है अत: आवश्यकता है उन शक्तियो को जागृत कर आदमी को इंसानियत का गुण सिखाना तभी श्रेष्ठ समाज की स्थापना होगी। उक्त विचार ज्ञान शिखर कॉम्प्लेक्स ओमशान्ति भवन मे **स्वस्थ विचार सुंदर संसार** श्रृंखला के अंतर्गत आयोजित त्रिदिवसीय कार्यक्रम मे बिलासपुर से पधारी ब्र.कु.मंजू दीदी ने व्यक्त किये। आपने बताया कि सर्वश्रेष्ठ और सर्वोच्च समाज सेवक तो परमात्मा है जिनका सान्निध्य मनुष्य को निस्वार्थ प्रेम की अनुभूति कराता है। यदि मनुष्य इस नि:स्वार्थ प्रेम के पाठ को जीवन मे पढ़ले तो सच्चा इंसान बनकर समाज की सेवा कर सकता है।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप मे पधारे लायन्स डिस्ट्रिक्ट गवर्नर मल्टीपल काउन्सिल चेयरमेन भ्राता हरीश अग्रवाल ने कहा कि आज मनुष्य अपनी दिनचर्या में इतना व्यस्त हो गया है कि उसके स्वयं के जीवन की खुशी समाप्त हो गई है। अबआध्यात्मिकता के द्वारा इस खोई हुई खुशी को पुन: प्राप्त कर सकते हैं।

कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि भ्राता हरीश अग्रवाल, विशिष्ट अतिथि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के ब्रांच मैनेजर रमेश चंद्र गोयल एवं इंदौर जोन की मुख्य जोनल समन्वयक ब्र.कु.हेमलता दीदी, समाज सेवा प्रभाग की प्रभारी ब्र.कु.ममता बहन एवं ब्र.कु.चन्द्रकला बहन आदि ने दीप प्रज्जवलित कर किया मंच संचालन लायंस क्लब के पूर्व डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रतन लाल गुप्ता जी ने किया।

रायगढ़ (छ.ग.)। प्लेटिनम जुबली कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए छत्तीसगढ़ के गृह मंत्री ननकीराम कंवर, ब्र.कु.हेमलता,ब्र.कु.माधुरी, डॉ. भगत एवं अन्य।

**भिलाई नगर।** बाल व्यक्तित्व विकास शिविर का उद्घाटन करते हुए अधिशासी निदेशक आखौरी मधुरेन्द्र, ब्र.कु.मिली एवं ब्र.कु.प्राची।